ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 2 मार्च-अप्रैल 2020 मूल्य ₹1500

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

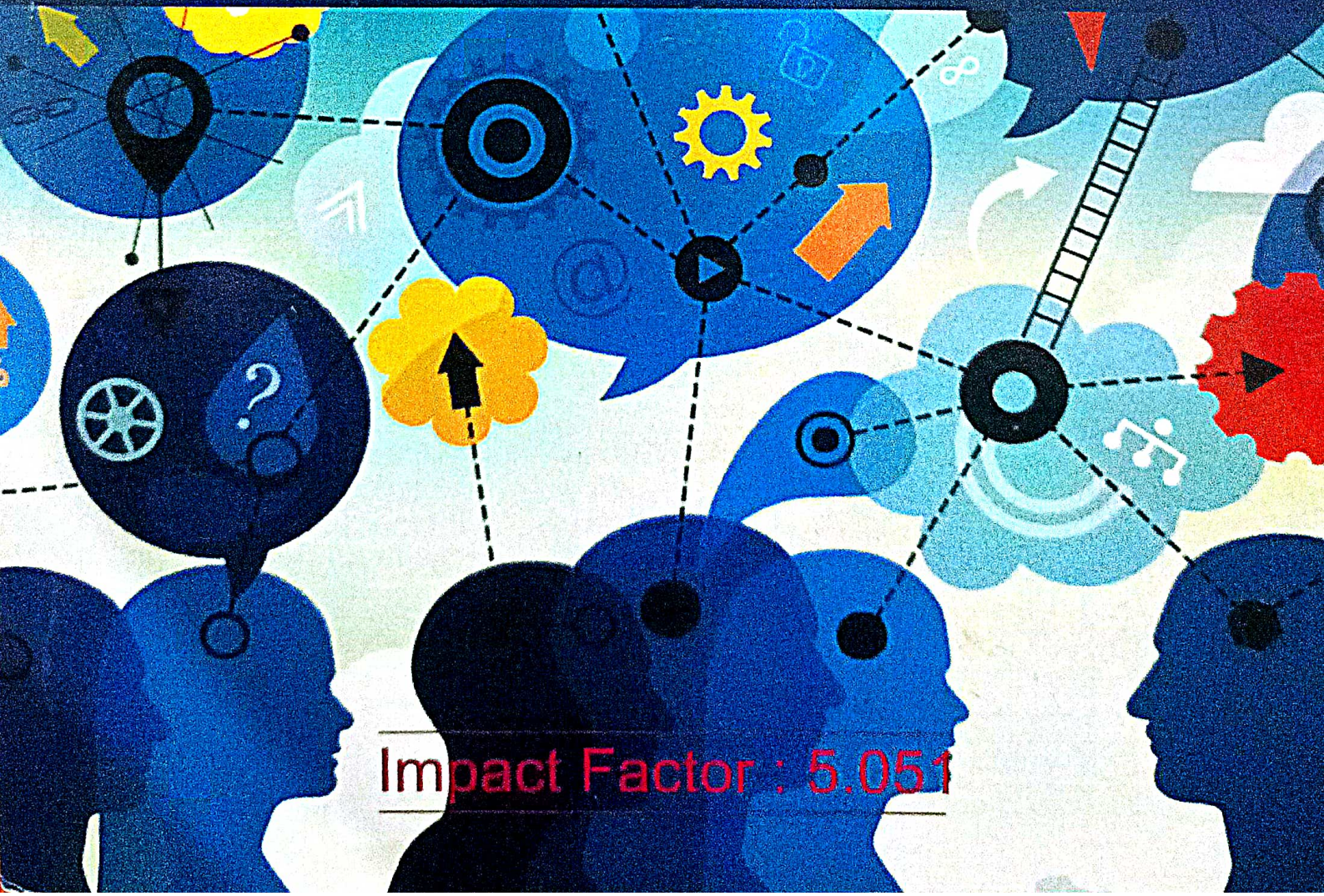

Impact Factor : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मासिक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

डॉ. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

विभिन्न कालों में प्राथमिक शिक्षा की भारतवर्ष में स्थिति का अध्ययन–जयप्रकाश यादव; डॉ० हलधर यादव 2125
मानवेन्द्रनाथ रॉय के राजनीतिक विचार–डॉ० सुबोध कुमार 2133
दुर्गा भाभी का क्रांतिकारी संघर्ष–डॉ० ईशा शर्मा 2137
रामायण : दार्शनिक चेतना–डॉ० सुगन्धा जैन 2143
व्यावसायिक कॉलेजों के कम बुद्धिमान, औसत बुद्धिमान और अधिक बुद्धिमान छात्र अपनी व्यावसायिक आकांक्षा के संबंध का अध्ययन–हुस्ना बानो; डॉ० संजीव कुमार 2149
आदर्शमूलक नीतिशास्त्र एवं विश्लेषणात्मक नीतिशास्त्र में सम्बन्ध–डॉ० प्रमोद कुमार सिंह 2156
आरक्षण के विरूद्ध समाजिक अवधारणा एक अध्ययन-प्रदीप कुमार 2160
डॉ0 ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम द्वारा कल्पित शिक्षक की अवधारणा-पाटिल कंचन गोपाल 2164
उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद के हथकरघा बुनकरों की समस्याओं का अध्ययन-चाँदनी सिंह; डॉ० विजेन्द्र प्रधान 2170
शक्ति की अवधारणा एक अध्ययन–डॉ० सुधीर कुमार शुक्ल 2176
मार्क्सवाद के साहित्यक प्रतिमान और हिन्दी साहित्य–डॉ० यतीन्द्र सिंह कुशवाहा 2179
गदर काव्य छंद-विधान–डॉ० हरबंस सिंह 2183
कबीर : पुनर्पाठ–डॉ० निम्मी ए.ए. 2187
पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका–डॉ० हर्षेन्द्र प्रताप सिंह 2191
चौधरी चरण सिंह जी के आर्थिक विचार एवं उनके विचारों की उपयोगिता का विश्लेषण–डॉ० ममता शर्मा; गीता 2198
सामाजिक-आर्थिक न्याय और समावेशी विकास: भारत के संदर्भ में एक अध्ययन–एन राजेन्द्र सिंह 2204
अमरकान्त की कहानियों में सामाजिक वर्गीय जीवन का संक्षिप्त विश्लेषण –डॉ० कनुभाई बिछिया भाई निनामा; ओमप्रकाश 2211
तहसील फरीदपुर में जनसंख्यात्मक वितरण-एक भौगोलिक विश्लेषण–डॉ० ए० के० एस० राना; बादाम सिंह 2216
अमिश त्रिपाठी के शिव रचनात्रय में वर्तमान प्रासंगीकता–पटेल रविचंद्र बाबूलाल 2222
भारत में शिक्षक शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य–कमल चन्द्र गहतोड़ी; डॉ० कल्पना पाटनी लखेड़ा 2227
हिन्दी भाषा वर्ण-विचार, वर्तनी और शुद्धिकरण–डॉ० अर्जुन के० तडवी 2232
मनरेगा: रोजगार के अवसर पैदा करने का सशक्त माध्यम–सुनीता कुमारी; डॉ० अशोक कुमार मिश्रा 2236
मौर्यकालीन भूमि स्वामित्व: एक ऐतिहासिक विश्लेषण–डॉ० स्वर्ण मणि 2245
वनवासी सामुदायिक अधिकारों के मुद्दे और पहचान–प्रीती 2249
वैयाकरण सम्प्रदाय में धातु एवं क्रिया का स्वरूप–डॉ० योगेन्द्र कुमार धामा 2254
साठोत्तरी कविताका उद्भव एवं उसका प्रारम्भिक स्वरूप–डॉ० जया द्विवेदी 2258
वर्तमान परिदृश्य में 'मधुमेह' रोग के कारणों का अध्ययन–वन्दना सिंह यादव 2267
विचित्र नाटक: एक अवलोकन–डॉ० ज्योति कौर 2271
ग्रामीण महिला सशक्तिकरण: मुद्दे एवं चुनौतियां–आसीन खाँ; डॉ० अनिल कुमार यादव 2277
प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना एवं महिला सशक्तिकरण–वीर कुमार 2283
दलित विमर्श एक अवधारणात्मक प्रस्थापना–चरन सिंह 2288

अमरकान्त की कहानियों में सामाजिक वर्गीय जीवन का संक्षिप्त विश्लेषण

डॉ० कनुभाई बिछिया भाई जिनामा

कला संकाय, हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ोदरा, गुजरात

ओमप्रकाश

रिसर्च स्कॉलर, हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ोदरा, गुजरात

1.1 सार-

अमरकांत प्रेमचन्द की परम्परा के कथाकार हैं। परम्परा का विकास करने वाला ही परम्परा का कथाकार कहा जाता है। प्रेमचन्द ने हिन्दी कथा साहित्य को एक लम्बी यात्रा सम्पन्न करायी है। उनके कथा साहित्य की विषय-वस्तु और स्वर विविधपूर्ण हैं जिनमें 'सारंगा सदावृक्ष' और 'आत्माराम' जैसी लोकवार्ता का आश्रय लेकर चलने वाली कहानियाँ 'दिल की रानी' और 'शतरंज के खिलाड़ी' जैसी ऐतिहासिक कहानियाँ, 'दो बैलों की कथा' जैसी प्रतीकात्मक कहानियाँ 'मैकू', 'इस्तीफा', 'बड़े घर की बेटी' जैसी हृदय परिवर्तन पर आधारित कहानियाँ और आद्यांत सामाजिक यथार्थ यानी सामाजिक विषमता का निर्वाह करने वाली 'पूस की रात' और कफन जैसी कहानियाँ सम्मिलित हैं। प्रेमचन्द ने प्रधानत: आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी कहानियाँ लिखी हैं। उनकी अधिकांश कहानियों में स्वाधीनता आन्दोलन की दीप्ति और आदर्शवाद विद्यमान है। अमरकांत ने अपने कथा साहित्य का सूतर्पात प्रेमचन्द की इन्हीं परवर्ती कहानियों से पकड़ा है। अपने लेखन के प्रारम्भिक दौर में अमरकांत प्रेमचन्द की ऐतिहासिक दृष्टि सम्पन्नता एवं प्रगतिशीलता से प्रभावित हुए। प्रेमचन्द ने जिस भूमि पर लाकर कथा साहित्य को छोड़ा, अमरकांत ने वहीं से कथा साहित्य को उठाया है।

1.2 प्रस्तावना-

अमरकांत का कथा साहित्य कहीं आस-पास की दुनिया का अर्थ खोलती है, कहीं छोटी-छोटी परिस्थितियों की पीड़ा उभारती है, तो कहीं आदर्शवादी नुस्खों के खोखलेपन, ढोंग भरी अक्षमता, व्यक्तिवादिता, स्वार्थ एवं धूर्तता पर से पर्दा उठाती है। घटना और दृष्टिकोण के सामंजस्य से रची ये दिलचस्प, सार्थक और कलात्मक रचनायें भारतीय समाज एवं जीवन की सम्भावनाओं के संघर्ष को आगे बढ़ाती हैं।अमरकांत का कथा साहित्य अपने समय और समाज की जीवन्त सार्थक अभिव्यक्ति है। उसके भीतर से जीवन-यथार्थ की धड़कनों को सुना और महसूस किया जा सकता है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में जीवन यथार्थ को पूरी गहराई, जटिलता और सूक्ष्मता से अभिव्यक्त किया है। उनके कथा-साहित्य की मुख्य शक्ति है उनकी अपने आस-पास की रोजमर्रा के यथार्थ को जानने-समझने की तीव्र संवेदनीय दृष्टि। जनसमुदाय के निकट सम्पर्क से वे बराबर शक्ति ग्रहण करते रहे। यही वजह है कि वे बहुत सहजता के साथ जीवनगत यथार्थ की पेंचीदा सम्बन्धों को बारीकी से पकड़ने और रचनाशीलता में ढालने में समर्थ रहे हैं। मानव मूल्यों में उनकी आस्था कभी डांवाडोल नहीं हुई, यह उनके बहुविध वृहद् कथा संसार का बड़ा सच है। अमरकांत के यहाँ

जीवन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। जीवन की यह निरंतरता संघर्ष की निरंतरता भी है और संघर्ष की निरंतरता बहुमूल्य मूल्यों को सहेजे रखने की निरंतरता को संकेतिक करती है। महनीय मूल्यों के साथ कथाकार की गहरी सम्बद्धता ही है कि आज तक उनकी रचनाशीलता की ऊर्जा बरकरार है।

1.3 समाज के विभिन्न सम्बन्धों में प्रस्तुत दृष्टिकोण

अमरकांत मध्यवर्गीय कस्बाई समाज के ऐसे समृद्ध और सशक्त कथाकार हैं जिन्होंने इस समाज के सामने उनकी समस्त समस्याओं, आशा व आकांक्षाओं, अच्छाइयों और बुराइयों को परत-दर-परत उकेर दिया है। हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचन्द के बाद उनकी ही पृष्ठभूमि में रचना करने का श्रेय नि:संकोच कथाकार अमरकांत को जाता है, जिन्होंने उनकी परम्परा का बखूबी निर्वाह किया है। "प्रेमचन्द की विडम्बना थी सवर्ण वर्ण की थोपी हुई बैकुण्ठ की कल्पना। यह वर्ग माया की ठगनी रूप में जीता है। अमरकांत की विडम्बना थी सवर्ण वर्ण की थोपी हुई बैकुण्ठ की कल्पना। यह वर्ग माया की ठगनी रूप में जीता है। अमरकांत की विडम्बना यह है कि उच्च वर्ण की हँसी-ईमानदारी और भलाई के बाद क्रूर यथार्थ।"

अमरकांत इस दशक के सभी कथाकारों में एक मात्र ऐसे कथाकार हैं जो प्रेमचन्द के सबसे निकट हैं। उनके कथा साहित्य में खासतौर पर निम्न मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चितर्ण मिलता है। अगर प्रेमचन्द जमीन पर खड़े होकर आकाश की तरफ झांकते हैं तो अमरकांत यथार्थ के धरातल पर खड़े होकर जमीन की गहराई में झांकते हैं।

अमरकांत ने अपने कथा साहित्य में निम्नमध्यवर्गीय पार्तो के जिस करुण स्थिति का चितर्ण किया है उतना समकालीन कथाकारों में अन्यत्र दुर्लभ है। अमरकांत की संवेदना अत्यन्त व्यापक तथा दृष्टिफलक अत्यन्त तीव्र है जिसका परिणाम हमारी आँखों के सामने उनके कथा साहित्य के रूप में प्रस्तुत है। उनके कथा साहित्य को पढ़ने से प्रतीत होता है कि उनके कथा के पात्र और कथा की समस्त घटनाएँ एक तस्वीर की भाँति हमारी आँखों के सामने से गुजर रहे हों। अमरकांत के लेखन ने मानवीय अनुभव की व्यापकता और मानवीय मन की संकीर्णता को पूरी तरह से पहचाना है।

अमरकांत स्वयं मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुए थे और वह भली प्रकार जानते थे कि मध्यवर्ग का व्यक्ति किस प्रकार अपना जीवन यापन करने के लिए संघर्षरत रहता है। उन्होंने बचपन से ही निम्नमध्यवर्गीय परिवार व समाज को देखा-परखा है, पाठक वर्ग उनके प्रत्येक कहानी को उठाकर देख सकते हैं, सभी में मध्य वर्ग की विभीषिका का ज्वलंत साक्ष्य उपलब्ध होता है। अमरकांत गाँव से जुड़े कथाकार हैं। गाँव के शान-शौकत से सभी लोग भली-भाँति परिचित हैं कि वहाँ का ठाट-बाट कैसा होता है, सभी रइसों के घर के सामने छोटे-छोटे किसान, मजदूर व निर्धन-गरीब हाजिरी लगाने आते हैं और अपनी समस्याओं को बताकर उनको पूरा करने के लिए गिड़गिड़ाते हैं। यह बात अलग है कि उनका स्वार्थ पूरा होता है कि नहीं। इन समस्त बातों से कथाकार अच्छी तरह से परिचित थे। निम्न वर्ग के बारे में जितना ज्ञान अमरकांत को है शायद उतना अन्य किसी साहित्यकार को नहीं है। अमरकांत स्वयं अपने आत्मकथ्य में इस बात को स्वीकार करते हैं और बताते हैं-

"दरवाजे पर रोज दुखिया, दरिद्र, अपाहिज बेसहारा लोग आते थे, मुँह खोल गिड़गिड़ाते थे और लोगों की डाँट-डपट खाते थे। किसी दावत समारोह के बाद मेहतर लोग कूड़े पर फेंके गए जूठे पत्तलों के लिए आपस में लड़ते थे। इन दृश्यों को देखकर वह उदास हो जाते।" स्पष्ट है कि जिसके आँखों के सामने ऐसी ज्वलंत समस्याएँ उपस्थित रही हों तो उनके कथा साहित्य में इन समस्याओं का प्रभाव कैसे नहीं पड़ेगा।

अमरकांत के सामने आजादी के बाद की कठिन परिस्थितियाँ रही हैं और रहा है उससे उत्पन्न तिक्त दु:ख। उनके कथा साहित्य में इस अनिवार्य विसंगत यथार्थ का विवरण भी है और विडम्बना बोध भी और है अपनी आकांक्षा और हताशा, क्षुद्रताओं और महानताओं को जीता-संघर्ष करता सामान्यजन, जो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपनी जीवनेच्छा को, जिजीविषा को सहेजे रखता है। सच ही अमरकांत के कथा साहित्य में जिन्दगी की जद्दोजहद में जिन्दगी की चाह शिद्दत से शामिल है। जीवन के तमाम अन्तर्विरोधों का खुलासा करते हुए अमरकांत ने कहीं भी कथ्य पर विचारधारा का मुलम्मा नहीं चढ़ाया।

अमरकांत आगरा में प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़े तबसे बराबर संगणक के लिए काम करते रहे। उन्होंने अपनी रचनाशीलता में पूरी तन्मयता से उत्पीड़ित-बेबस मानवता की बौनी अनुभूतियों का सूक्ष्म जीवंत चित्र उपस्थित कर जता दिया कि पक्षधर यथार्थ का मायने क्या होता है? उनके शुरूआती दौर की 'जिन्दगी और जोंक', 'डिप्टी कलक्टरी', 'दोपहर का भोजन' जैसी

अत्यन्तमहत्वपूर्ण कहानियों में पसरी चुप्पी के बीच का सघन संश्लिष्ट यथार्थ ही मुखर हो बता देता है कि यही सही विचारधारात्मक संलग्नता है। अभावग्रस्त दीन-हीन चरितों के अन्तर्द्वन्द्वों का, उनके तीखे-यातनापूर्ण संघर्षों का और मौन रहकर दहला देने वाली सच्चाइयों का यथार्थ अंकन ही उनकी रचनाशीलता को सामाजिक संघर्षों के वृहत्तर उद्देश्यों से सम्बद्ध कर देता है। निश्चित ही जन-सामान्य की नीतियों और उलझावों के सहज सरल पर जटिल जीवन चितों को आन्दोलित कर जाती है उन्हें व्यग्र और बेचौन बना देती है।

गिरिराज किशोर अमरकांत के बारे में बताते हैं कि- ''अमरकांत के सम्पूर्ण कथा साहित्य से यह पता चलता है कि अमरकांत ने जिन्दगी के अभावों को रचनात्मकता की भट्ठी में ईधन की तरह झोंका है और उससे अपने रचनाकार को तपाकर खरा किया है, अपने अभावों और लेखन के बीच एक ऐसा समीकरण स्थापित करके चले हैं जो आमतौर से संभव नहीं होता, उनके रचनाकार की इस विशिष्टता ने उन्हें बहुत से मानसिक संकटों से बचा लिया है। अपने उन अभावों से ही उन्होंने लेखक को समृद्ध करने का काम किया है।''

अमरकांत का कथा साहित्य निम्नमध्यवर्गीय परिवार की भीतरी तनाव की कथा है। अतीत और भविष्य से निश्चिंत होकर उनके कथा साहित्य में वर्तमान जटिलताओं के प्रति एक समझदार सवाल है। मध्यवर्गीय परिवेश के प्रति आलोचनात्मक रूख ही अमरकांत के कथा साहित्य को समर्थ और सार्थक बनाता है। किसी भी रचनाकार के रचना निर्माण में उसका परिवेश बहुत कुछ उसके व्यक्तित्व को निर्मित और कृतित्त्व को विनिर्मित करता है। अमरकांत स्वयं मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुए, मध्यवर्ग का व्यक्ति प्राय: बुद्धिवादी रहा है, इतिहास प्राय: इस बात का गवाह रहा है। समाज के नये विचारों का प्रचार करने का श्रेय इसी वर्ग का रहा है, चूँकि मध्यवर्ग बुद्धिवादी रहा है इस कारण सामाजिक समस्याओं की परख करने में पूर्णतया सक्षम रहा है। अमरकांत के कथा साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता वातावरण के निर्माण में उनकी सार्थकता है। अपनी बात कहने के लिए जिस वातावरण का निर्माण करते हैं, उसमें उतनी यथार्थता और स्वाभाविकता होता है कि कहीं कोई आरोपण प्रतीत नहीं होता।

अमरकांत के यहाँ मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ विविध रूपों में झाँकता दिखाई देता है। इन्होंने अपने कथा साहित्य में मध्यवर्गीय परिवार की व्यथा, आर्थिक तंगी, टोना-टोटका, सफेदपोशी के लिए संघर्ष, पर्यटन में किफायत, मध्यवर्गीय मुहल्लों की समस्या, मकान की परेशानी, निजी मकान पर गर्व, मध्यवर्गीय परिवारों में वृद्धावस्था, स्नेह का अभाव, मध्यवर्गीय प्रेम, मध्यवर्ग का अफसोस, मध्यवर्ग का झूठ व उनके द्वारा आरोपित सामूहिक आयोजन, मध्यवर्ग की विकास कार्यों में संलग्नता आदि का यथार्थ एवं जीवन्त चितर्ण उपस्थित किया।

अमरकांत मुख्यत: मध्यवर्ग के कथाकार हैं। मध्यवर्ग के अन्तर्गत निम्नवर्ग की जीवन रीति, स्वभाव संस्कार, विचार पद्धति तथा विभिन्न प्रकार की कुण्ठाओं एवं उनके प्रभावों को परखने में इनमें पैनी दृष्टि है। निम्न-मध्यवर्ग के जीवन का सजीव चितर्ण करने की सफलता का रहस्य अमरकांत का अपना निजी जीवन है। अमरकांत का जीवन निम्न-मध्यवर्ग समाज की मानसिक कुण्ठाओं, नैतिक वर्जनाओं तथा विषमताओं के परिवेश में विकसित हुआ है। जीवन के तिक्त अनुभवों द्वारा विकट भावभूतियों ने उनके व्यक्तित्व तथा दृष्टिकोण को प्रभावित किया है। इसी कारण इनके कथा में मध्यवर्गीय पात्र अधिक सजीव लगते हैं और इन्होंने अपने कहानियों में मध्यवर्ग की जिन समस्याओं को उठाया है वह यथार्थ में मध्यवर्गीय जीवन की कहानी सुनाते हैं।

अमरकांत के कथा साहित्य में व्यक्ति जीवन का यथार्थ अभिव्यक्त हुआ है। उनकी रचनाओं में व्यक्ति की आशा-आकांक्षा, दु:ख-दर्द, गरीबी संघर्ष, जिजीविषा मुखरित हुई है। किस प्रकार पारिवारिक व सामाजिक परिस्थितियां उसे व्यक्ति को गलत रास्ते पर चलने के लिए मजबूर करती है। उसकी जिजीविषा को समाप्त कर उसे आत्मघाती कदम उठाने के लिए विवश करती हैं लेकिन इन्ही विपरीत पारिवारिक सामाजिक परिस्थितियों में कुछ व्यक्ति तो हताश निराश होकर टूट जाते हैं, कुण्ठाग्रस्त हो जाते है। आत्महत्या जैसे कदम उठा लेते हैं। समाज विरोधी हो जाते हैं लेकिन कुछ व्यक्ति इन विपरीत परिस्थितियों से टकराते है। अपनी अन्तिम सांस तक लड़ते हैं और हार नही मानते हैं। जैसे 'जिन्दगी और जोंक' कहानी का मुख्य पात्र रजुआ।

महादेवी वर्मा के शब्दों में-''संघर्ष की कला लेकर तो मनुष्य उत्पन्न ही हुआ है, उसे सीखने कही जाना नही पड़ता। यदि वास्तव में मनुष्य ने इतने युगों में कुछ सीखा है तो वह जीने की कला कही जा सकती है और यह कला रजुआ को बाखूबी आती है।

रजुआ अमरकांत का देखा हुआ पात्र है। मोहल्ले में जिस दिन उसका आगमन हुआ लेखक ने उसे उसी दिन देखा था। रजुआ पर साड़ी चोरी करने का आरोप लगता है। उसकी पिटाई होती है। इस घटना के बाद वह इसी मुहल्ले में रहने लगता है। लोग उससे

अपना छोटा-छोटा काम करवाने लगते हैं, और कुछ खाने पीने को दे देते है। अमरकांत ने लिखा है कि "उसकी सेवाओं की उपयोग सम्बन्धी खीचतानी से उसका सामाजीकरण हो गया। मोहल्ले का कोई भी व्यक्ति उसे दो चार रूपये देकर स्थायी रूप से नौकर रखने को तैयार न हुआ, क्यों कि वह इतना शक्तिशाली कतई न था कि चौबीस घंटे नौकर की महान जिम्मेदारियां संभाल सके।..... .अब न वह शिवनाथ बाबू के यहां टिकता और न जमुनालाल के यहाँ क्यों कि उसको कोई टिकने ही न देता। इसको रजुआ ने भी समझ लिया और मोहल्ले के लोगों ने भी, वह अब किसी व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि सारे मोहल्ले का नौकर हो गया।

रजुआ का जीवन यथार्थ हमारे समाज की उस सच्चाई को प्रकट कर देती है जिसमें व्यक्ति के शोषण का भी सामाजीकरण हो जाता है और वह कुछ कर नही सकता क्यों कि जीना है तो किसी भी हद तक जाना होगा। रजुआ हर परिस्थिति को स्वीकार करता है। और बदले में जो कुछ मिल जाता है उसी में प्रसन्न हो जाता है। "मैंने घूमकर एक निगाह उस पर डाली। उसके हाथ में एक रोटी और थोड़ा-सा अचार था और वह सुअर की भांति चापुड़-चापुड़ खा रहा था। बीच-बीच में वह मुस्करा पड़ता जैसे कोई बड़ी मंजिल सर करके बैठा हो।

इसी कहानी के पात्र शिवनाथ बाबू जैसे व्यक्ति के माध्यम से अमरकांत ने समाज के शोषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों की कलई खोली है। शिवनाथ बाबू जैसे लोग गरीबों की मजबूरी का फायदा उठाकर उनका अमानवीयता की हद तक शोषण करते है और स्वयं को बड़ा सहृदय, परमार्थी व दयाशील प्रकट करते हैं। शिवनाथ बाबू ने ही रजुआ को साड़ी चोरी के इलजाम में पीटा था लेकिन बाद में जब उन्हे लगा कि वह उनके काम का है तो उसे बुलाकर अपने यहां रहने-खाने को कहते है। रजुआ उनके यहां रहने लगता है और काम के बदले में उसे मिलता है सिर्फ दो जून का भोजन-"लेकिन एक दिन उन्होंने किसी शुभ मुहुर्त में उसे सड़क से गुजरते समय संकेत से बुलाया और तिरछी नजर से देखते हुए, मुस्करा कर बोले, देख बे, तूने चाहे जो भी किया, हमसे तो यह सब नही देखा जाता दर-दर भटकता रहता है। कुत्ते-सुअर का जीवन जीता है। आज से इधर-उधर भटकना छोड़, आराम से यहीं रह और दोनों जून भरपेट खा।"

'जिन्दगी और जोंक 'अमरकांत की एक प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी का प्रमुख पात्र 'रजुआ' जितना निरीह व दयनीय है उतना ही काइयां भी तथा निम्नमध्यवर्गीय गुणों से युक्त है। वह अंधविश्वासी है तथा भूत प्रेत कों मानता है। दाढ़ी बढ़ाकर शनीचरी देवी को जल चढ़ाता है। पगली को फुसलाकर अपनी शरीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी करता है। इसी तरह मूस कहानी का 'मूस' भी एक निरीह व शोषित पात्र हैं। वह परबतिया के इशारे पर नाचता रहता है। "वह इतना दबा-दबा रहता कि परबतिया उससे दो शब्द मीठा बोलना भी जरूरी नहीं समझती। वह सदा रूखाई से पेश आती। ..... परवतिया उसको अक्सर 'दो वित्ते का मर्द' कहकर अपनी उच्चता और प्रभुत्व की पुष्टि करती रहती है।"

मध्यवर्गीय व्यक्ति भाग्यवादी होता है। उसे अपने कर्म व परिश्रम से ज्यादा ईश्वर पर विश्वास होता है। तभी तो 'डिप्टी कलक्टरी' के शकलदीप बाबू को भाग्य व भगवान पर ज्यादा भरोसा है। वे अपनी पत्नी को पूजा पाठ करने को कहते है। स्वयं भी मन्दिर जाने लगते है। "नारायण की अम्माँ आजकल तुम्हारा पूजा पाठ नहीं होता क्या ?" .... "सुनते हैं सच्चे मन से राधास्वामी की पूजा करने से सभी मनोरथ सिद्ध हो जाते है।" इस तर्कहीन व्यवस्था में व्यक्ति को जब मेहनत व ईमानदारी के बावजूद भी फल नहीं मिलता तो उसका भाग्यवादी हो जाना स्वाभाविक भी है। व्यक्ति को जब अपने परिश्रम का फल नहीं मिलता तो उसके लिए कर्मठता निरर्थक हो जाती है। श्रम के प्रति उसका उत्साह व विश्वास समाप्त हो जाता है।' गगन बिहारी 'का सुन्दरलाल इसी तरह का पात्र है। जो बड़ी-बड़ी योजनाएं तो बनाता है लेकिन उसे क्रियान्वित नहीं कर पाता क्योंकि वह अपने कार्य के प्रति निष्क्रिय है। इसके पीछे हमारे समाज की तर्कहीन व्यवस्था जिम्मेदार है। जहां व्यावसायिक सफलता परिश्रम व मेहनत से नहीं बल्कि चमत्कार से प्राप्त होता है। "उसने निश्चय कर लिया कि होमियोपैथी डाक्टरी करके ही अब वह जीवन में आगे बढ़ेगा। यह कार्य कठिन नहीं।" ... " होमियोपैथी में पता नहीं कितनी प्रतिक्षा करनी पड़े, लेकिन इसमें तो चट बोइए और पट काटिए। .... खेती में उसकी प्रतिभा निश्चत रूप से चमक सकती है।" अन्त में वह व्यापार करने की सोचता है लेकिन उसे भी क्रियान्वित नहीं कर पाता है।

1.4 निष्कर्ष-

अमरकांत उन रचनाकारों में है जिनकी कहानियाँ न केवल कथ्य और शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ हैं बल्कि जो हमारे समय का अपूर्व ही सही प्रमाणिक दस्तावेज है। आज यह कार्य अनेक पुराने समाजवेत्ता रचनाकार कर रहे हैं लेकिन हमारे विषमताग्रस्त सामाजिक वातावरण की तर्कहीनता, असुरक्षा, संत्रास का सर्वाधिक विश्वसनीय और मार्मिक चितर्ण अमरकांत की कहानियों में

मिलता है। निःसंदेह गहरी मानवीय संवेदनाओं एवं व्यापक सहानुभूतियों से ही रचना प्रभावशाली एवं संप्रेषणीय बनती है। अतः हम कह सकते है कि अमरकांत ने मध्यवर्गीय व्यक्ति, परिवार व समाज के अन्तर्सम्बन्धों को, उनके यथार्थ को प्रमाणिक रूप चित्रित किया है। अमरकांत ने यह स्पष्ट किया है व्यक्ति पर परिवार व समाज का गहरा असर होता है तथा व्यक्ति भी समाज को गहरे रूप से प्रभावित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

- उषा प्रियम्बदा, रूकोगी नहीं राधिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सातवीं आवृत्ति-2010
- डा0 एलाङ्बम विजयलक्ष्मी,समकालीन हिन्दी उपन्यासः समय से साक्षात्कार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2006
- डॉ. गोपाल कृष्ण अग्रवाल, सामाजिक विघटन, एस बी पी डी पब्लिशिंग हाउस, आगरा, ग्यारहवाँ संस्करण-2010
- डॉ0 जय जय राम उपाध्याय, भारत का संविधान, सेन्ट्रल ला एजेन्सी इलाहाबाद-2013
- वीरेन्द्र यादव, प्रगतिशीलता के पक्ष में, साहित्य भण्डार, इलाहाबाद प्रथम संस्करण-2014
- फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, ग्यारहवीं आवृत्ति-2006
- नामवर सिंह, कहानीः नई कहानी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण-2012
- अमरकांत, सुन्नर पांडे की पतोह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति-2015
- अमरकांत, अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियों (दूसरा खंड), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2013
- अमरकांत, इन्हीं हथियारों से, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति-2014
- अमरकांत, बीच की दीवार (उपन्यास), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण-2008
- अमरकांत, काले-उजले दिन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति-2014
- अमरकांत, कुछ यादें, कुछ बातें (संस्मरण), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति-2014